सुखेन लभ्या दधत: कृषीवलैरकृष्टपच्या इव सस्यसम्पद: ।

वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति ।।१७।।

अन्वय-

चिराय तस्मिन् क्षेमं वितन्वति (सति) अदेवमातृका: कुरव: अकृष्टपच्या इव कृषीवलै: सुखेन लभ्या सस्यसम्पद: दधत: (सन्त:) चकासति १७ ॥

अर्थ-

चिरकाल से प्रजा के कल्याण के लिए यत्नशील उस राजा दुर्योधन के कारण नदियों एवं नहरों की सिंचाई की सुविधा से समन्वित कुरुप्रदेश की भूमि मानों वहाँ के किसानो को बीना अधिक परिश्रम उठाए हुए ही बड़ी सुविधा के साथ स्वयं प्राप्त होने वाले अन्नों की समृद्धि से सुशोभित हो रही है।।१७।।

टिप्पणी-

तात्पर्य है कि दुर्योधन केवल राजनीति पर ही ध्यान नहीं दे रहा है, वह प्रजा की समृद्धि को भी बढ़ा रहा है। उसने समूचे कुरुप्रदेश को अब वर्षा के जल पर ही नहीं निर्भर रहने दिया है, नहरों एवं कुओं से भी सिंचाई की सुविधा पर दी है । समूचा कुरुप्रदेश धनधान्य ने भरा-पूरा हो गया है। यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है॥ १७ ॥

उदारकीर्तेरुदयं दयावत: प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।

स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्तुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी ॥१८॥

अन्वय-

उदारकीर्ते दयावत: अभिरक्षया प्रशान्तबाधम् उदयं दिशत: वसूपमानस्य अस्य गुणै: उपस्तुता मेदिनी वसूनि स्वयं प्रदुग्धे ॥ १८ ॥

अर्थ-

महान् यशस्वी, परदुःखकातर, समस्त उपद्रवों एवं बाधाओं को शान्त कर, प्रजावर्ग की सुरक्षा की सुव्यवस्था का सम्पादन करनेवाले, कुबेर के समान उस दुर्योधन के गुणों से रीझी हुई धरती (नवप्रसूता दुधार गौ की भांति) धनधान्य (रूपी दूध स्वय दे रही है) को स्वयं उत्पन्न कर रही है ॥ १८ ॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि दुर्योधन के दया दाक्षिण्य आदि गुणों ने पृथ्वी को द्रवीभूत-सा कर दिया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि समूचे कुरु प्रदेश की धरती मानों द्रवित होकर स्वयमेव दुर्योधन को धन-धान्य रूपी दूध दे रही है । यहाँ समासोक्ति अलंकार है। अतिशयोक्ति का भी पुट है।